Baba’s Praise

6/2/2015

- शिवबाबा एक ही **टीचर** है जो **सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज सुनाते** हैं, यह भी याद नहीं रहता है ।

- शिवबाबा तो अशरीरी है इसलिए कहते हैं अशरीरी बनो, मुझ बाप को याद करो । कहते भी हो-हे **पतित-पावन**, वह तो एक हुआ ना ।

- और कोई सृष्टि के **आदि-मध्य- अन्त का ज्ञान** दे न सके । **84 के सीढ़ी का राज** कोई समझा न सके सिवाए **निराकार बाप** के । उनका असली नाम ही है **शिव** ।

- जैसे बाम्बे में **बबुलनाथ** कहते हैं, परन्तु वह अर्थ थोड़ेही समझते । तुम समझते हो **कांटों को फूल बनाने वाला** है ।

- यह है **युधिष्ठिर**, **युद्ध के मैदान में बच्चों को खड़ा करने वाला** ।

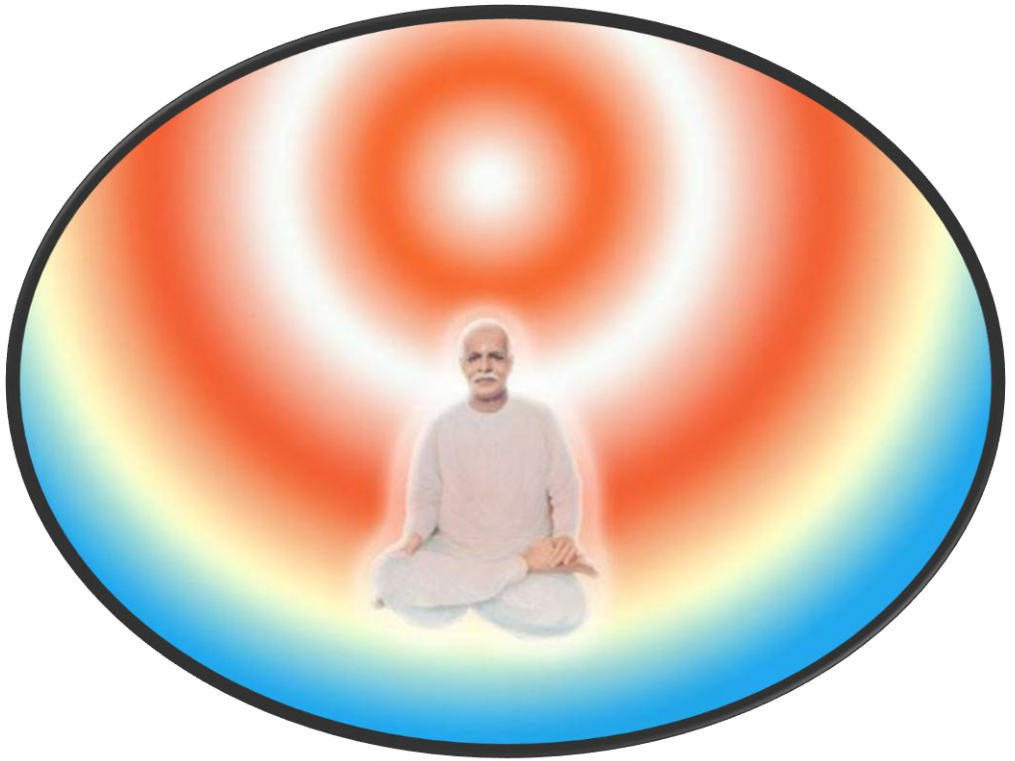

- **शिवबाबा साजन** तो **सदा जागती ज्योत** है । बाकी हमारी ज्योति जगाई है ।

- तुम बच्चे प्रदर्शनी में भी समझा सकते हो कि तुमको दो फादर हैं - लौकिक और **पारलौकिक** । इसमें बड़ा कौन? बड़ा तो जरूर **बेहद का बाप** हुआ ना । वर्सा उनसे मिलना चाहिए । अभी वर्सा दे रहे हैं, विश्व का मालिक बना रहे हैं । भगवानुवाच-तुमको **राजयोग सिखाता हूँ** फिर तुम दूसरे जन्म में विश्व के मालिक बनेंगे । बाप **कल्प-कल्प भारत में आकर भारत को बहुत साहूकार बनाते** हैं ।

- यह तो **बाप, टीचर, गुरू** एक ही है । तो बाप का वर्सा, टीचर का वर्सा और गुरू का वर्सा सब देते हैं ।

- यह तो बाप ही आकर **सारी दुनिया को गोल्डन एजेड बनाते** हैं । अब तुम बच्चे तो कहेंगे हम बेहद के बाप से पढेंगे । मनुष्य से पढ़ने से क्या मिलेगा? मास में क्या कमाई होगी?